

खिजां के दौर में- फरिश्ते बहारें लाये यहाँ^{sss}
सामने रु-बरु बैठे न जान पाया जहाँ

एक भटके हुये राही को- बता दी मंजिल^{sss}
अब के बिड़ड़े हुये^{ss||2||} मल्लोगे कहाँ^{sss}

सामने रु-ब-रु-----

खिजां के दौर-----

दिया था प्यार तुझे- भूल गया क्यों वन्दे
ऐसी फिर भोली भाली^{ss||2||} मर्क को तू- पायेगा कहाँ^{sss}

सामने रु-ब-रु-----

खिजां के दौर-----

दर्द-दिल-दर्द वफा, दर्द-मुहब्बत पाई
रुवाब में सोचा न था^{sss||2||} मैंने कभी-जाने जहाँ

सामने रु-ब-रु-----

खिजां के दौर-----

गम में डूबे हुये-इंसा भी लुप्त लेते हैं^{sss||2||}
खूब देखा "श्री बाबा श्री" इनका ये बरबदे जहाँ^{sss}

सामने रु-ब-रु-----

खिजां के दौर-----